रामईया
रामईया
सतनाम
एक ओंकार सतिगुरु प्रसादि
गुरबाणी सतसंग
शुद्ध
मेरे अपने
सच्चे साहिब जी
जो न भजते नारायणा
तिन का मै न करउ दरशना
कृपया अमल कर व्यवहारिक बनें । ताकि समर्थ हो कर आगे बढ़ जा सकें ।

“सच का पिंजर”

ਕਾਗਾ ਕਰੰਗ ਢੰਢੋਲਿਆ ਸਗਲਾ ਖਾਇਆ ਮਾਸੁ।
ਏ ਦੁਇ ਨੈਨਾ ਮਤਿ ਛੁਹਉ ਪਿਰ ਦੇਖਨ ਕੀ ਆਸ।

1. ए दुइ नैना मत छुहउ - पिर देखन की आस । कागा करंग ढंढोलिआ - सगला खाइआ मास ।

अर्थः- कौओं ने पिंजर भी फरोल मारा है । और सारा मास खा लिया है (भाव - दुनियावी पदार्थों के चस्के और विषौ-विकार इस अति-कमजोर हुए शरीर को भी चुभन लगाए जा रहे हैं । इस भौंके शरीर की सारी ताकत इन्होंने खींच ली है) । रॅब कर के कोई विकार (मेरी) इन दोनों आँखों को ना छेड़े । इनमें तो प्यारे प्रभू को देखने की चाहत टिकी रहे ।

2. फरीदा तन सुका पिंजर - थीआ तलीआँ खूँडह काग । अजै सु रब न बाहुड़िओ - देख बदे के भाग ।

अर्थः- हे फरीद ! यह (भौंका) शरीर (विषौ-विकारों में पड़ कर) बहुत जर्जर हो गया है । पिंजर बन के रह गया है । (फिर भी ये) कौए इसकी तलियों पर ठूँगे मारे जा रहे हैं (भाव - दुनियावी पदार्थों के चस्के और विषौ-विकार इसके मन को चुभोएं लगाए जा रहे हैं) । देखो (विकारों में पड़े) मनुष्य की किस्मत भी अजीब है कि अभी भी (जबकि इसका शरीर दुनिया के विषौ भोग भोग के अपनी सत्ता भी गवा बैठा है) रॅब इस पर प्रसन्न नहीं हुआ (भाव। इसकी झाक खत्म नहीं हुई) ।

3. कागा चूँड न पिंजरा - बसै त उडर जाह । जित पिंजरै मेरा सह वसै - मास न तिदू खाह । (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी - 1382)

अर्थः- हे कौए ! मेरा पिंजर में ठूँगे ना मार । अगर तेरे वश में (ये बात) है तो (यहाँ से) उड़ जा । जिस शरीर में मेरा पति-प्रभू बस रहा है इसमें से मास ना खा (भाव। हे विषयों के चस्के ! मेरे इस शरीर को

चोंच मारनी छोड़ दे । तरस कर । और जा । खलासी कर । इस शरीर में तो पति-प्रभू का प्यार बस रहा है । तू इसको विषौ-भोगों की तरफ प्रेरने का यतन ना कर) ।

4. नैनहु नीर बहै तन खीना - भए केस दुध वानी । रूधा कंठ सबद नही उचरै - अब किआ करह परानी । (659)

अर्थः- हे जीव ! (वृद्ध अवस्था में कमजोर होने के कारण) तेरी आँखों में पानी बह रहा है । तेरा शरीर क्षीण हो रहा है।तेरे केश दूध जैसे सफेद हो गए तेरा गला (कफ़ से) रुकने के कारण बोल नहीं सकता; अभी (भी) तू क्या कर रहा है।(भाव।अब भी तू परमात्मा को याद क्यों नहीं करता।तू क्यों शरीर के मोह में फंसा हुआ है।तू क्यों देह-अध्यास नहीं छोड़ता।)।

5. फरीदा बुरे दा भला कर - गुसा मन न हढाइ । देही रोग न लगई - पलै सभ किछ पाइ । (1381)

अर्थः- हे फरीद ! बुराई करने वाले के साथ भी भलाई कर। गुस्सा मन में ना आने दे । (इस तरह) शरीर को कोई रोग नहीं लगता और हरेक पदार्थ (भाव । अच्छे गुण) संभाले रहते हैं ।

6. फरीदा सकर खंड निवात गुड़ - माखिओ माँझा दुध । सभे वसतू मिठीआँ - रब न पुजन तुध । (1379)

अर्थः- हे फरीद ! शक्कर। खंड। मिसरी। गुड़। शहद और माझा दूध - ये सारी चीजें मीठी हैं पर। हे रॅब ! (मिठास में यह चीजें) तेरे (नाम की मिठास) तक नहीं पहुँच सकतीं ।

7. फरीदा इनी निकी जंघीऐ - थल डूँगर भविओम्हि । अज फरीदै कूजड़ा - सै कोहाँ थीओम । (1378)

अर्थः- हे फरीद ! इन छोटी-छोटी जांघों से (जवानी के वक्त) मैं थल और पहाड़ फिर आता रहा । पर आज (बुढ़ापे में) मुझे फरीद को (यह थोड़ी सी दूर पड़ा हुआ) लोटा सौ कोसों पर हो गया है (सो । बँदगी का वक्त भी जवानी ही है जब शरीर काम दे सकता है) ।

8. बिरहा बिरहा आखीऐ - बिरहा तू सुलतान । फरीदा जित तन बिरह न ऊपजै - सो तन जाण मसान । (1379)

अर्थः- हर कोई कहता है (हाय !) विछोड़ा (बुरा) (हाय !) विछोड़ा (बुरा)। पर। हे विछोड़े ! तू बादशाह है (भाव। तुझे मैं सलाम करता हूँ। क्योंकि)। हे फरीद ! जिस शरीर में विछोड़े का दर्द नहीं पैदा होता (भाव। जिस मनुष्य को कभी ये चुभन नहीं लगी कि मैं प्रभू से विछुड़ा हुआ हूँ) उस शरीर को मसाण समझो (भाव । उस शरीर में रहने वाली रूह विकारों में जल रही है) ।

9. फरीदा चार गवाइआ हंढ के - चार गवाइआ संम । लेखा रब मगेसीआ - तू आँहो केर्हे कंम । (1379)

अर्थः- हे फरीद ! (इन विष-गंदलों के लिए । दुनिया के इन पदार्थों के लिए) चार (पहर दिन) तूने दौड़-भाग के व्यर्थ गुजार दी है । और चार (पहर रात) सो के गवा दी है । परमात्मा हिसाब माँगेगा कि (जगत में) तू किस काम के लिए आया था ।

10. फरीदा कोठे मंडप माड़ीआ - उसारेदे भी गए । कूड़ा सउदा कर गए - गोरी आइ पए । (1378)

अर्थः- हे फरीद ! ('विसु गंदलों' के व्यापारियों की ओर देखो) घर महल-माड़ियां उसारने वाले भी (इनको छोड़ के) चले गए । वही सौदा किया जो साथ नहीं निभा और (आखिर में खाली हाथ) कब्रों में जा पड़े ।

11. उठ फरीदा उजू साज - सुबह निवाज गुजार । जो सिर साँई ना निवै - सो सिर कप उतार ।

अर्थः- हे फरीद ! उठ। मुँह-हाथ धो । और सवेरे की नमाज़ पढ़ । जो सिर मालिक रब के आगे नहीं झुकता । वह सिर काट के उतार दे (भाव। बँदगी-हीन बंदे का जीना किस अर्थ का ।)।

जो सिर साई ना निवै - सो सिर कीजै काँइ । कुँने हेठ जलाईऐ - बालण सदै थाइ । (1381)

अर्थः- जो सिर (बँदगी में) मालिक-रब के आगे नहीं झुकता । उस सिर का कोई लाभ नहीं । उस सिर को हांडी तले ईधन की तरह जला देना चाहिए (भाव। उस अकड़े हुए सिर को सूखी हुई लकड़ी ही समझो) ।

(पाठी मां साहिबा)

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

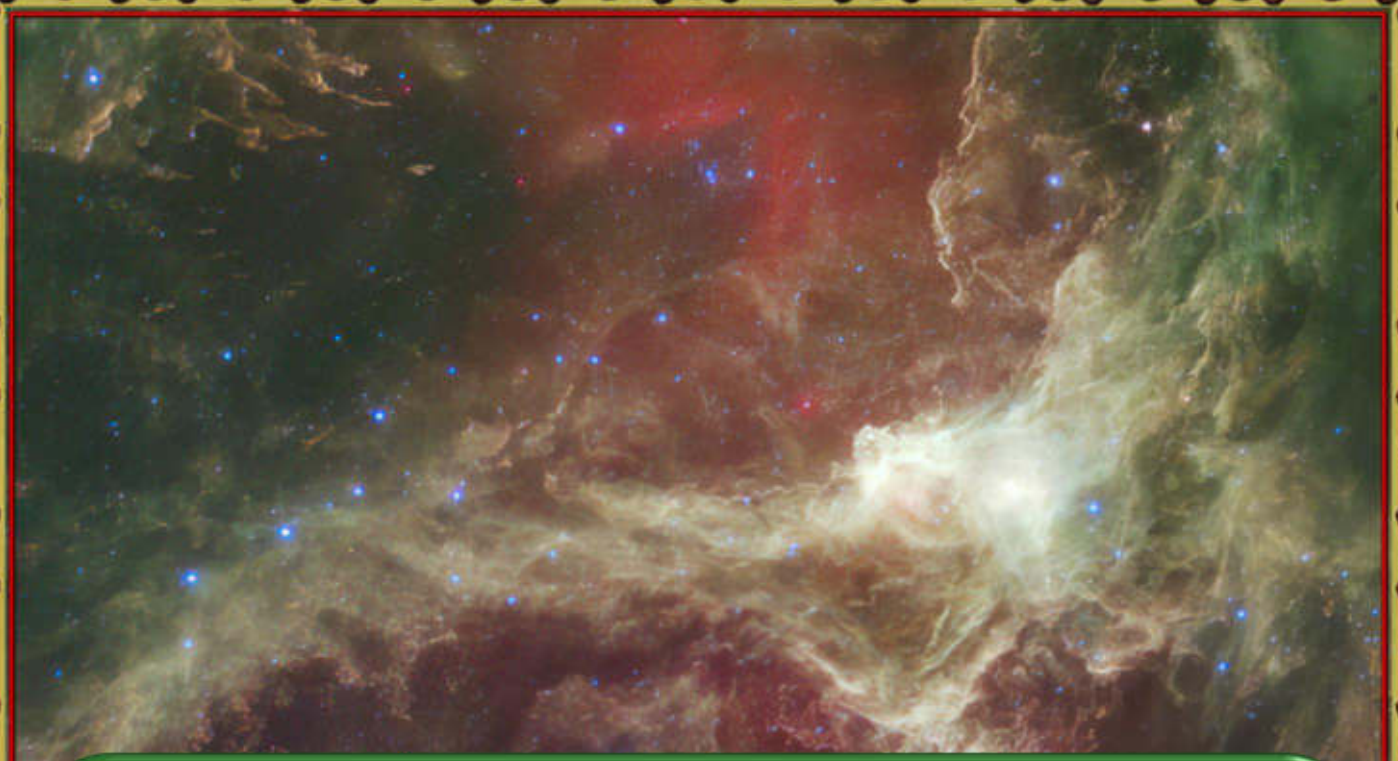

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि - "रागमई प्रकाशित सुगंधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नंही हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"